श्रीकृष्ण 'सरल' के कथा–साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. सरिता विश्वकर्मा

हिन्दी –विभाग, शासकीय महाविद्यालय, विजयराघवगढ़, जिला–कटनी (मध्यप्रदेश) भारत

सारांश

साहित्य से राष्ट्रीय–भावना का संबंध शाश्वत है। यह चैतन्य भावना साहित्य में किसी न किसी रूप में सदा विद्यमान रही है और आगे भी रहेगी। देश में जब–जब शौर्य, पराक्रम, साहस, बलिदान और त्याग–भावनाओं की आवृत्तियां होंगी तब–तब क्रांति–दृष्टाओं और क्रांति–सृष्टाओं का पुण्य स्मरण प्रेरणा का अक्षय–स्त्रोत बनकर सुषुप्त चेतना को जागृत कर लोगों को आत्म बल प्रदान करता रहेगा। साथ ही यह भी सत्य है, कि तब–तब राष्ट्रीय–चेतना सम्पन्न साहित्यकारों का उर्जस्वित कृतित्व राष्ट्र के सोये–खोये प्राणों में नव–चेतना का संचार करता रहेगा। उसे त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता रहेगा।

साहित्य से राष्ट्रीय–भावना का संबंध शाश्वत है। यह चैतन्य भावना साहित्य में किसी न किसी रूप में सदा विद्यमान रही है और आगे भी रहेगी। देश में जब–जब शौर्य, पराक्रम, साहस, बलिदान और त्याग–भावनाओं की आवृत्तियां होंगी तब–तब क्रांति–दृष्टाओं और क्रांति–सृष्टाओं का पुण्य स्मरण प्रेरणा का अक्षय–स्त्रोत बनकर सुषुप्त चेतना को जागृत कर लोगों को आत्म बल प्रदान करता रहेगा। साथ ही यह भी सत्य है, कि तब–तब राष्ट्रीय–चेतना सम्पन्न साहित्यकारों का उर्जस्वित कृतित्व राष्ट्र के सोये–खोये प्राणों में नव–चेतना का संचार करता रहेगा। उसे त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता रहेगा।

श्रीकृष्ण 'सरल' जी ने अपने उपनाम **'सरल'** को पूर्णतः सार्थक कर, अनवरत संघर्षो से जूझते हुये भी उन राष्ट्रभक्तों, शहीदों पर महान् उद्देश्य से प्रेरित होकर, देश पर मर मिटने वाले देश प्रेमियों की जीवन रेखाओं को कहानियों एवं उपन्यास का रूप दिया है। कहानियां और उपन्यास इसलिये कि आजाद भारत के किशोर इन्हें पढ़े, जाने परिचित हो और फिर महसूस करें कि स्वतंत्रता कितनी महंगी है? उस जमाने में देश की आजादी के लिये लोगों में सर कटाने की होड़ थी। हम लोग जिस सरलता से नाखून कटा लेते है, उससे अधिक सरलता से वे लोग देश की आजादी के लिये अपने सर कटा देते थे। विश्व के समक्ष अपने राष्ट्र का मस्तक ऊँचा करने वाले उन बलिदानी वीरों के प्रति यदि हम श्रद्धा प्रकट नहीं करेंगे तो यह हमारी कृतघ्नता होगी, आवश्यकता पड़ने पर देश की आजादी की रक्षा करने के लिये शहीद होने के लिये कौन तैयार होगा ? इस महत्ती भावना से 'सरल' जी का कथा–साहित्य क्रांतिकारियों और उनकी साहसिक गाथाओं को पाठकों तक पहुंचाने के लिये एक सशक्त माध्यम है। 'सरल' जी की कहानियां जीवन के ठोस धरातल पर टिकी है, अस्तु क्रांतिकारियों के जीवन–दर्शन का प्रामाणिक दस्तावेज है। त्याग, तप और बलिदान को आत्मसात कर इन शहीदों ने अपने रक्त से देश की माटी को उर्वरता प्रदान की है। लेखक कथा–साहित्य के माध्यम से इन चरित्रों को (क्रांतिकारियों) को जन–जन पहुंचा देना चाहते है। एक ऐसे कथाकार जो स्वयं इतिहास का शोधार्थी और भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के कुशल चितेरे है, तथा जिन्होंने एकनिष्ठ साधक बनकर जनमानस में जिस राष्ट्रभक्ति की चेतना का संचार किया है, वह इतिहास की धरोहर बन गयी है।

कथाकार के रूप में 'सरल' जी की कथा कृतियों के तीन धरातल हैं, प्रमुखतः राष्ट्रीय, ऐतिहासिक, सामाजिक–सांस्कृतिक। मुख्यतः 'सरल' जी **राष्ट्रीय चेतना** के कथाकार हैं। जिन्होंने अपने कथा–साहित्य में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर घटित

सत्य घटनाओं को अपनी कृतियों का आधार बनाया है। जिसमें तद्‌युगीन राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण हैं। इस दृष्टि से ऐतिहासिक एवं सामाजिक होते हुए भी मुख्य रूप से राष्ट्रीय चेतना से ही सम्पन्न हैं।

भारत की **राष्ट्रीय–चेतना** को सतत् प्रज्जवलित रखने वाले श्रीकृष्ण 'सरल' हिन्दी–साहित्य के एक अकेले ऐसे प्रकाश–स्तंभ हैं, जिनका अग्निधर्मी व्यक्तित्व एवं क्रांतिपथी कृतित्व अक्षय प्रेरणा का स्त्रोत बन गया है। राष्ट्रीय महायज्ञ में अपना तिल–तिल होम देने वाले महिमा मण्डित शहीदों की गौरव गाथा ही 'सरल' जी का साहित्य कर्म एवं साहित्य धर्म बन गया है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं मनीषी विद्वान **'पदम् श्री' डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'** के शब्दों में

''सरल जी ने उन दुर्गम स्थानों की यात्राऐं भी अपने स्वयं के व्यय से की हैं, जो इन महापुरुषों के सर्वोत्तम समर्पण के साक्षी रहे हैं। भारत के किसी भी कथाकार ने राष्ट्रीय महायज्ञ में समिधा बन जाने वाले हुतात्माओं की स्मृति–रक्षा के लिए वैसी एकनिष्ठ भाव से धूनी नहीं रमाई है जैसी कि 'सरल' जी ने, और इस धूनी को सतत् प्रज्जवलित रखने के लिए उन्होंने अपने सर्वस्व को हविष्य बनाकर होम दिया है।''

महान **कान्तिकारी स्व. भाई परमानंद** ने 'सरल' जी के यशस्वी व्यक्तित्व एवं कालजयी कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि –*''श्री सरल जी जीवित–जाग्रत शहीद हैं। उनकी साहित्य–साधना तपस्या कोटि की साधना है।''*

वस्तुतः 'सरल' जी का सम्पूर्ण कथा–साहित्य राष्ट्रीयता के उदात्त मूल्यों से अनुप्राणित है और उनके सम्पूर्ण कथा–नायक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अपराजेय सेनानी, और कौन नहीं जानता कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अपने जीवन का उत्सर्ग करने वाले क्रांतिवीरों का गौरवमय इतिहास है। इन वीरों की संख्या अंगुलियों पर नहीं गिनी जा सकती। स्वतंत्रता की बलिवेदी पर हंसते–हंसते न्यौछावर होने वाले इन वीरों की गाथा आप–हममें से कितने लोग जानते है ? हम दो–चार का नाम स्मरण कर आजादी दिलाने वालों के प्रति अपनी श्रद्धा की इतिश्री कर लेते हैं, किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये भारत के हजारों देश–भक्त विदेशों में क्रांतिबीज बोते रहे, जूझते रहे, और अपने जीवन को होम करते रहे। माटी की गंध से सराबोर उनका जीवन, माटी की धरोहर बन गया। भारत माता के ऐसे बलिदानी सपूतों को यदि आज हम याद नहीं करेंगे, तो कल देश पर कोई बलिदान नहीं होगा। स्वतंत्रता हमारे लिये फिर अलभ्य हो जायेगी। श्रीकृष्ण 'सरल' ने इसी महान उद्‌देश्य से प्रेरित होकर देश पर मर मिटने वाले देशप्रेमियों की जीवन रेखाओं को कहानियों एवं उपन्यास का रूप दिया है। युगीन संदर्भो एवं युग–बोध से जुड़ी होने के कारण इनका कथा–साहित्य इतिहास के अधिक निकट है। इन कथाओं एवं उपन्यासों के माध्यम से 'सरल' जी ने क्रांति–इतिहास लेखन का ही कार्य संपन्न किया है, जो सर्वथा एक नयी पहल है।

हिन्दी–साहित्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालने वाली राष्ट्रीय–चेतना का विकास सन् 1857 की स्वातन्त्र्य क्रांति से प्रारंभ होता है, किन्तु सन् 1857 से पूर्व, सन् 1757 अर्थात् प्लासी के युद्ध से ही यह चेतना भारतीय जन–मानस में अक्षुण्य थी। जिसके मूल में अंग्रेजी शासन की राजनीतिक परिस्थितियां प्रेरणा का काम कर रही थीं। अंग्रेजों की दिन–प्रतिदिन बढ़ती हुई शक्ति भारतीय इतिहास का नया अध्याय लिखती जा रही थी। प्लासी का युद्ध सन् 1757, बंगाल का प्रथम सैनिक विद्रोह–सन् 1764, जंगल महाल विद्रोह–सन् 1767, सन्यासी एवं फकीर विद्रोह–सन् 1763–73, बंगाल का द्वितीय सैनिक विद्रोह– सन् 1795, वैल्लोर का सैनिक विद्रोह– सन् 1803, चुआड़ विद्रोह–सन् 1798–1820, नायक

विद्रोह—सन् 1821, बैरकपुर का प्रथम सैनिक विद्रोह—सन् 1824, गुजरात का महीकांत विद्रोह—सन् 1836, धर राव विद्रोह—सन् 1841, कोल्हापुर विद्रोह—सन् 1844, संथाल विद्रोह—सन् 1854—55, सन् 1855 का सैनिक विद्रोह, ये सभी युद्ध सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम आंदोलन के कारण बने। ये और बात है, कि कहीं संगठन के अभाव में, कहीं अपने ही देश के गद्दारों ने एवं अंग्रेजी षड़यत्रों ने इन्हें सफल नहीं होने दिया। फिर भी राख में दबी चिंगारी की तरह सुलगती हुई, अंततः 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम रूपी आग में परिणित हो गयी और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के रूप में राष्ट्रीय—चेतना का विश्व व्यापी प्रभाव देखने को मिला। यही राष्ट्रीय—चेतना भारतीय जन—मानस को स्वतंत्रता संग्राम की ओर ले जाने वाला प्रथम सोपान था। भले ही अंग्रेजों ने इसे 'गदर', 'बगावत' आदि नामों से संबोधित किया ''किन्तु यह कुछ सिरफिरें देशी नरेशों की छुटपुट बगावत नहीं थी, बल्कि सामन्तवाद की अंतिम और संगठित कोशिश थी, अपने को जीवित रखने की।'' अतः आने वाली घटनाऐं भारतीय इतिहास की वे घटनाऐं है जिनसे 'सरल' जी का कथा—साहित्य प्रभावित है। सन् 1857 का स्वतंत्रता संग्राम वह प्रथम चरण है, जहां से आधुनिक राष्ट्रीय—चेतना का विकास प्रारंभ होता है। निःसंदेह यह आंदोलन अंग्रेजी सत्ता को मिटा देने का महान उद्योग था। जिसका प्रभाव कालांतर में स्पष्ट हुआ और सन् 1947 अर्थात् भारत की स्वाधीनता तक क्रमशः यही राष्ट्रीय—चेतना भारतीय जन—मानस में प्रेरणा का कार्य करती रही।

भारत के स्वाधीनता संग्राम सेनानियों के अथक शांतिमयी एवं क्रांतिमयी प्रयासों के बाद इस देश में आजादी तो आयी किंतु भारत माता के अंग छिन्न—भिन्न हो गये। हठवादी एवं उग्रवादी सांप्रदायिक मानसिकता ने देश को खण्डित कर दिया। अपने ही देश में देशवासी शरणार्थी बन गये। अखण्ड भारत की सीमायें संकुचित हो गयी। इतना ही नहीं सीमा के उस पार कत्ले—आम का जो ताण्डव मचा उससे भारतमाता की आत्मा तक कांप उठी। देश में दुख, निराशा, विद्वेष, घृणा ने जन—जीवन को पूरी तरह झकझोर दिया। यद्यपि भारत को आजादी तो मिली किन्तु भारत का एक बहुत अच्छा भू—भाग पुर्तगाली शासन के अधीन था। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में मिलिट्री ऐक्शन सफल हुआ और सन् 1961 में गोवा मुक्ति के साथ ही हमारे देश को पूर्ण आजादी मिली। 20 अक्टूबर सन् 1962 के चीन का आक्रमण, एवं सन् 1965 में पाकिस्तान आक्रमण, ने सुप्त राष्ट्रीयता को पुनः जागृत किया। इन दोनों ही स्थितियों में सारा देश एकता के सूत्र में आबद्ध होकर अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रति संवेदनशील होकर जाग उठा। यही कारण है, कि सरल जी की स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय चेतना एवं स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय—चेतना दोनों ही उनके साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत रहें हैं। इतना ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय—सामाजिक आदर्शो की विराट एवं प्रबुद्ध चेतना को लेकर निरंतर गतिशील है। आधुनिक हिन्दी—साहित्य में राष्ट्रीयता को अभिव्यक्त करने वाले इन्ही विविध स्वरों के जीवन एवं आदर्शो को ही अपने लेखन का लक्ष्य बनाया है। इस चरित पूजा के पीछे श्री 'सरल' की विराट एवं निश्छल किंतु संकल्पित हृद्‌य की पूत भावनाएं ही प्रकट होती हैं। राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित क्रांतिकारी जीवन—दर्शन की यह धारा श्री सरल की रचना प्रक्रिया की सहज, स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यद्यपि ब्रिटिश शासन से पूर्व ही भारत में विदेशी आक्रांताओं के रूप में आये मुसलमानों का ही आधिपत्य था, किन्तु अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्य के संपर्क से भारतवासियों को अपनी राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दुरावस्था का गहरा अहसास हुआ। फलतः भारत का जन—मन देश की स्वाधीनता, जातीय गौरव की प्रतिष्ठा

तथा नव–चेतना की अकांक्षा को लेकर व्यथित हो उठा। इस सामूहिक राष्ट्रीय–अनुचेतना को सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने वाणी प्रदान कर हिन्दी–साहित्य को लोक एवं जन–जीवन के समीप लाकर खड़ा कर दिया।

राष्ट्रीयता के उद्दात मूल्यों से अनुप्राणित सरल जी की समस्त रचनाएं आने वाली पीढ़ियों के लिये उच्चतम आदर्श प्रस्तुत करेंगी। सरल जी ने देश की स्वाधीनता के लिये मर मिटने वाले क्रांतिकारियों की संघर्ष कथा को कहना ही अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया है। उनकी समस्त रचनाएं क्रांति नायकों के जीवन आदर्शो से ओत–प्रोत है। उन्होंने बिना प्रमाण के न कुछ कहा न कुछ लिखा। श्री सरल के शब्दों में मेरा यह नियम है कि

''मैं जिस चरित नायक पर लिखता हूँ उससे संबंधित सभी क्षेत्रों को अपनी आंखों से देखता हूँ तथा उससे संबंधित व्यक्तियों से मिलकर जानकारी प्राप्त करता हूँ।''

अपनी इस प्रक्रिया की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए 'जय–सुभाष' महाकाव्य में श्री सरल का कथन है कि आजाद हिन्द आंदोलन से संबंधित भू–भागों का भ्रमण करने में निश्चित ही लेखन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। लगभग तीस वर्षो से आजाद हिन्द आंदोलन का अध्ययन करते रहने और उससे संबंधित व्यक्तियों से निकट संपर्क में रहने के कारण घटनाओं और सिद्धांतों को सही परिप्रेक्ष्य में निरूपित किया जा सका है। श्री सरल ने सुभाष शोध यात्रा के अंतर्गत भारत के विविध नगरों अंडमान निकोबार द्वीप समूह, बर्मा, मलेशिया, सिंगापुर, थाइलैण्ड, हांगकांग, जापान, फारमोसा, पाकिस्तान, नेपाल आदि देशों की यात्राऐं अपने निजी व्यय से की हैं। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए श्री सरल ने लिखा है कि –

''मन में महत्वाकांक्षा जागी–क्या ही अच्छा हो, यदि मैं विदेशों के उन सभी स्थलों के दर्शन कर सकूं, जहां–जहां नेताजी के चरण पड़े है और शहीदों का खून गिरा है। मन ने सोचा यदि ऐसा नहीं हुआ तो लेखन में जान नहीं आयेगी। और विचार ने संकल्प का रूप ले लिया।''

वस्तुतः क्रांतिकारी राष्ट्रीय लेखन में रत रचनाकारों को समय–समय पर अपना सब–कुछ बेचकर लेखन की कीमत चुकानी पड़ती है। फिर भी सरलजी को इस बात का संतोष रहा कि प्रकाशन–व्यवस्था में चाहे सब कुछ बिक गया हो, पर ईमान अर्थात् रचनाजीवी–धर्म नहीं बिक सका, वह जीवित, जागृत प्रबुद्ध रहा। वस्तुतः श्री सरल ने जो भी राष्ट्रीय लेखन किया है, उसकी पूरी–पूरी कीमत चुकायी है। इससे यह स्पष्ट होता है, कि 'सरल' जी ने अपनी रचना–धर्मिता को संपूर्ण दायित्वों के साथ सजगता से निभाया है। **'सरल' जी ने क्रांतिकारी कोश (प्रथम खण्ड)** में लिखा है कि

''मैं व्यक्तिगत रूप से जो सामग्री सत्ताईस वर्षो में जुटा सका, उससे कथाओं के रूप में संजोकर रख दिया है। वैसे इन कथाओं में पूरा इतिहास छिपा है, और वह भी कालक्रमानुसार। मैंने एक बात का अवश्य ध्यान रखा है, कि किसी कल्पित पात्र या घटना का इसमें समावेश नहीं किया गया है। सबकुछ इतिहास जैसा ही प्रमाणिक और सत्य है। कथाओं में बिखरा हुआ यह क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास है।''

संपूर्ण भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन, भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती के प्रति जितनी भक्ति और मातृ–भावना उस युग में थी उतनी कभी नहीं रही। मातृभूमि की सेवा और उसके लिये सर्वस्व समपर्ण की भावना का आज नितान्त अभाव हो गया है। 'सरल' जी ने सम्पूर्ण भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में सम्मिलित लगभग दो हजार क्रांतिकारियों की सच्ची कहानियों का सचित्र संकलन किया है जो अत्यन्त दुष्कर कार्य है। **क्रांतिकारी कोश प्रथम खण्ड, द्वितीय खण्ड,**

RESEARCH CHRONICLER

तृतीय खण्ड, चतुर्थ खण्ड, पंचम खण्ड भारतीय क्रांतिकारियों का इनसाइक्लोपीडिया है।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' एवं **'इदं राष्ट्राय नमम्'** जैसे वेदमंत्रों का गान करने वाली भारत–भूमि में राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले बलिदानियों की अटूट परम्परा रही है। वीरता की इसी गौरवशाली एवं मृत्युंजयी परम्परा की अक्षुण्णता के लिए संघर्षो और बलिदानों की महिमा–मण्डित अतीत गाथाओं से सम–सामयिक, वर्तमान एवं आगत भविष्य को सतत् प्रेरित करने का प्रयास हिन्दी–साहित्य के आधुनिक काल में राष्ट्रीय जागरण के वैतालिक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, भगवती चरण वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, वृंदावन लाल वर्मा, यशपाल से लेकर अन्यान्य साहित्यकार रहें है किन्तु इन सभी के प्रयास एक लक्ष्यात्मक नहीं रहे है। जबकि श्री कृष्ण 'सरल' जी ने भारत के क्रांति–पथी बलिदानी वीरों और युग–पुरूषों की गौरवगाथाओं द्वारा राष्ट्रीय–चेतना के जागरण को ही अपना लेखकीय कर्म एवं लेखकीय धर्म का इष्ट बना लिया है।

'सरल' जी का राष्ट्रीय–चेतना सम्पन्न कथा–साहित्य अतीत से सीधे भविष्य की यात्रा है। उसमें वर्तमान की स्वीकृति का अनावश्यक मोह इसलिये नहीं है क्योंकि उसके साथ सबसे बड़ा सत्य यह है, कि वह इतिहास के सत्य के साथ है, स्वतंत्रता के सत्य के साथ है, क्रांति और उसके समग्र मानवीय दर्शन के साथ है। 'सरल' जी और उनके राष्ट्रीय कथा–साहित्य की प्रासंगिकता उस 'आदर्श के' साथ जुड़ी है, जिसे कोई देश अस्वीकार नहीं कर सकता। कम से कम भारत वर्ष जैसा आत्म सम्मानी और गौरव–गरिमा से पूर्ण देश तो इसकी प्रासंगिकता को कभी अस्वीकार कर ही नहीं सकता है। इस प्रकार 'सरल' जी की सृजनशीलता उनके जीवन पर्यन्त चलती रही। उनकी अदम्य लेखन का उदाहरण मृत्यु से एक घण्टे पूर्व लिखा यह मुक्तक है–

''यादें नक्श हो जाये किसी पत्थर पर तो
वे पत्थर दिल को पिघला सकती है।
यादें होती होते उनके पैर नहीं
पर पीढ़ियों तलक वे जा सकती है।''

सरल जी का समग्र साहित्य ही उत्कट् राष्ट्रीयता से अनुप्राणित है। 'सरल' जी के कथा–साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता **यथार्थ पात्रों द्वारा, यथार्थ घटनाओं का यथार्थ अंकन** है। कल्पना लोक में विचरण कर ऐतिहासिक तथ्यों की अवहेलना आपको कदापि पसंद नहीं रहा। क्रांतिकारी एवं शहीदों से संबंधित वर्णन में सत्य और प्रमाणिक घटनाओं तथा इतिहास सम्मत सामग्री को ही अपने कथा–साहित्य का आधार बनाया है। यही कारण है, कि आपके उपन्यास इतिहास के प्रामाणिक दस्तावेज बन गये हैं। सच कहा जाये तो सरल जी ही एक मात्र ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन क्रांति एवं क्रांतिकारियों को समर्पित कर रखा। आधुनिक राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न कथाकारों में सरल जी का नाम सहज रूप से लिया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

- श्रीकृष्ण 'सरल' – क्रांतिकारी कोश (प्रथम खण्ड) भूमिका से।
- डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' – 'सरल' अभिनन्दन–ग्रंथावली। पृ. 65.
- भाई परमानंद – 'सरल' अभिनन्दन–ग्रंथावली। पृ. 51–52.
- डॉ. श्री राम परिहार – क्रांतिकारियों की जीवन गाथाएँ।
- पं. परमानंद – 'क्रांति–गंगा' अभिव्यक्ति।
- श्रीकृष्ण 'सरल' – अभिनंदन–ग्रंथ – नेताजी सुभाष स्मृति मंच ।
- इन्टरनेट से – 'सरल–चेतना' वेबसाइड से प्राप्त।